Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

छत्तीसगढ़ की जनजातीय एवं लोक ज्ञान–संपदा के संरक्षण में पुस्तकालयों और डिजिटल अभिलेखागारों की भूमिका: एक अध्ययन

डॉ. चन्द्रसेन जांगड़े
सहायक प्राध्यापक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाव,
डॉ. सी. व्ही. रामन विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा,
बिलासपुर (छ.ग.)
drchandrasenjangde@gmail.com

सारांश

छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध जनजातीय संस्कृति, लोक परंपराओं, मौखिक इतिहास, लोक साहित्य, लोकगीतों, पारंपरिक ज्ञान तथा सांस्कृतिक विविधता के लिए विशेष पहचान रखता है। राज्य की अनेक जनजातीय एवं ग्रामीण समुदायों में ज्ञान का संचार मुख्यतः मौखिक परंपराओं के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी होता रहा है। आधुनिकता, शहरीकरण, तकनीकी परिवर्तन तथा जीवन–शैली में हो रहे परिवर्तनों के कारण अनेक पारंपरिक ज्ञान स्रोतों के लुप्त होने की संभावना बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में पुस्तकालय, सूचना केंद्र तथा डिजिटल अभिलेखागार इस अमूल्य ज्ञान–संपदा के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की जनजातीय एवं लोक ज्ञान–संपदा के संरक्षण में पुस्तकालयों और डिजिटल अभिलेखागारों की भूमिका का अध्ययन करना है। अध्ययन में पारंपरिक ज्ञान के विभिन्न स्वरूपों, दस्तावेजीकरण की आवश्यकता, डिजिटल संरक्षण की संभावनाओं तथा प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। शोध–पत्र यह प्रतिपादित करता है कि आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्थानीय ज्ञान को डिजिटल रूप में संरक्षित कर भावी पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सकता है।

मुख्य शब्दः छत्तीसगढ़, जनजातीय ज्ञान, लोक ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान, डिजिटल अभिलेखागार, पुस्तकालय, सांस्कृतिक संरक्षण।

1. परिचय

भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों और ज्ञान परंपराओं का देश है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक पहचान होती है। छत्तीसगढ़ भी ऐसी ही विविध ज्ञान परंपराओं से समृद्ध राज्य है। यहाँ जनजातीय समुदायों, ग्रामीण समाज और स्थानीय सांस्कृतिक समूहों के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

पास प्रकृति, कृषि, लोक चिकित्सा, संगीत, नृत्य, धार्मिक परंपराओं तथा सामाजिक जीवन से संबंधित व्यापक पारंपरिक ज्ञान उपलब्ध है।

यह ज्ञान प्रायः लिखित रूप में संरक्षित नहीं है। इसका संचार लोकगीतों, कहानियों, मौखिक परंपराओं, धार्मिक अनुष्ठानों, सामाजिक प्रथाओं तथा प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से होता है। आधुनिक सामाजिक परिवर्तन के कारण इन ज्ञान परंपराओं के निरंतर संरक्षण की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र समाज की ज्ञान–संपदा के संरक्षण के प्रमुख संस्थान हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग से पुस्तकालय अब केवल मुद्रित सामग्री के संरक्षण तक सीमित नहीं हैं। वे डिजिटल दस्तावेजों, ऑडियो, वीडियो, चित्र, पांडुलिपियों तथा मौखिक इतिहास को भी संरक्षित कर सकते हैं।

2. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक एवं जनजातीय विविधता

छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत विविध राज्य है। यहाँ अनेक जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। प्रत्येक समुदाय की अपनी विशिष्ट भाषा, लोक परंपरा, सामाजिक संरचना और ज्ञान प्रणाली है।

राज्य की प्रमुख सांस्कृतिक ज्ञान–संपदा में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं–

1. लोकगीत।
2. लोक कथाएँ।
3. लोक नृत्य।
4. पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान।
5. कृषि संबंधी स्थानीय ज्ञान।
6. वनोपज से संबंधित ज्ञान।
7. पारंपरिक खाद्य ज्ञान।
8. लोक कला।
9. धार्मिक परंपराएँ।
10. मौखिक इतिहास।

यह ज्ञान केवल सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सामाजिक विज्ञान, इतिहास, पर्यावरण अध्ययन, मानव विज्ञान तथा पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के शोध के लिए भी उपयोगी है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

3. पारंपरिक ज्ञान की अवधारणा

पारंपरिक ज्ञान से आशय उस ज्ञान से है जो किसी समुदाय द्वारा लंबे समय से अनुभव, अभ्यास और सामाजिक परंपराओं के माध्यम से विकसित किया गया हो।

पारंपरिक ज्ञान की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- यह समुदाय आधारित होता है।
- यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होता है।
- इसका आधार अनुभव एवं व्यवहार होता है।
- इसका संबंध स्थानीय पर्यावरण से होता है।
- इसका अधिकांश भाग मौखिक रूप में संरक्षित होता है।
- यह सामूहिक सांस्कृतिक संपत्ति का रूप रख सकता है।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में पारंपरिक ज्ञान का महत्व विशेष रूप से इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि राज्य के अनेक क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों की जीवन–शैली प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय पर्यावरण से जुड़ी हुई है।

4. लोक ज्ञान के संरक्षण की आवश्यकता

लोक एवं जनजातीय ज्ञान के संरक्षण की आवश्यकता कई कारणों से है।

4.1 मौखिक परंपरा का संकट

जब ज्ञान केवल मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है, तब उसके लुप्त होने की संभावना बनी रहती है।

4.2 सामाजिक परिवर्तन

आधुनिक शिक्षा, रोजगार और शहरीकरण के कारण युवा पीढ़ी पारंपरिक ज्ञान से दूर हो सकती है।

4.3 भाषा का संकट

स्थानीय एवं जनजातीय भाषाओं का उपयोग कम होने से उनमें निहित ज्ञान भी प्रभावित हो सकता है।

4.4 शोध की आवश्यकता

स्थानीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण अनेक विषयों के शोध के लिए उपयोगी हो सकता है।

4.5 सांस्कृतिक पहचान

लोक ज्ञान किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार होता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

5. पुस्तकालयों की भूमिका

पुस्तकालय ज्ञान के संरक्षण, संगठन और प्रसार के लिए महत्वपूर्ण संस्थान हैं। छत्तीसगढ़ की लोक एवं जनजातीय ज्ञान–संपदा के संरक्षण में पुस्तकालय निम्नलिखित भूमिका निभा सकते हैं।

5.1 दस्तावेजीकरण

लोकगीत, लोककथाएँ, साक्षात्कार और मौखिक इतिहास को रिकॉर्ड कर दस्तावेज बनाया जा सकता है।

5.2 संग्रह निर्माण

स्थानीय इतिहास एवं संस्कृति से संबंधित विशेष संग्रह तैयार किए जा सकते हैं।

5.3 वर्गीकरण एवं संगठन

संग्रहित सामग्री को व्यवस्थित कर शोधार्थियों के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है।

5.4 डिजिटल संरक्षण

पारंपरिक सामग्री को स्कैनिंग, ऑडियो रिकॉर्डिंग और वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से डिजिटल रूप में सुरक्षित किया जा सकता है।

5.5 सूचना प्रसार

डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्थानीय ज्ञान को व्यापक स्तर तक पहुँचाया जा सकता है।

6. डिजिटल अभिलेखागार की अवधारणा

डिजिटल अभिलेखागार ऐसी व्यवस्था है जिसमें महत्वपूर्ण दस्तावेजों और अन्य सामग्री को डिजिटल रूप में संरक्षित किया जाता है।

डिजिटल अभिलेखागार में निम्न सामग्री रखी जा सकती है–

- डिजिटल दस्तावेज
- फोटो
- ऑडियो रिकॉर्डिंग
- वीडियो
- लोकगीत
- मौखिक इतिहास
- पांडुलिपियाँ
- मानचित्र

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

• शोध सामग्री

डिजिटल अभिलेखागार का सबसे बड़ा लाभ यह है कि सामग्री को सुरक्षित रखते हुए उसे अनेक उपयोगकर्ताओं तक पहुँचाया जा सकता है।

7. छत्तीसगढ़ के लिए जनजातीय डिजिटल अभिलेखागार की आवश्यकता

छत्तीसगढ़ में एक व्यापक जनजातीय एवं लोक ज्ञान डिजिटल अभिलेखागार विकसित किया जा सकता है।

इसमें निम्नलिखित सामग्री सम्मिलित की जा सकती है–

1. जनजातीय लोकगीत।
2. लोककथाएँ।
3. पारंपरिक नृत्य।
4. स्थानीय भाषाएँ।
5. मौखिक इतिहास।
6. पारंपरिक कृषि ज्ञान।
7. वन एवं औषधीय पौधों से संबंधित ज्ञान।
8. लोक कला।
9. पारंपरिक वाद्य यंत्र।
10. सांस्कृतिक कार्यक्रमों के डिजिटल रिकॉर्ड।

यह डिजिटल अभिलेखागार शोध, शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

8. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंकृ

1. छत्तीसगढ़ की जनजातीय एवं लोक ज्ञान–संपदा के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण की आवश्यकता का विश्लेषण करना।
3. पुस्तकालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
4. डिजिटल अभिलेखागार की उपयोगिता का विश्लेषण करना।
5. लोक ज्ञान के डिजिटल संरक्षण की चुनौतियों को समझना।
6. छत्तीसगढ़ के लिए एक डिजिटल संरक्षण मॉडल प्रस्तावित करना।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

9. शोध प्रश्न

1. छत्तीसगढ़ की प्रमुख लोक ज्ञान–संपदाएँ कौन–कौन सी हैं?
2. पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण की आवश्यकता क्यों है?
3. पुस्तकालय इस ज्ञान के संरक्षण में किस प्रकार योगदान दे सकते हैं?
4. डिजिटल अभिलेखागार की क्या भूमिका हो सकती है?
5. डिजिटल संरक्षण के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ कौन–सी हैं?

10. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए पुस्तकें, शोध लेख, सरकारी दस्तावेज, पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक संस्थानों से संबंधित उपलब्ध सामग्री तथा डिजिटल स्रोतों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। उपलब्ध साहित्य के आधार पर छत्तीसगढ़ की लोक ज्ञान–संपदा, पुस्तकालयों की भूमिका तथा डिजिटल संरक्षण की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

11. जनजातीय एवं लोक ज्ञान के डिजिटल संरक्षण की प्रक्रिया

डिजिटल संरक्षण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जा सकती हैकृ

चरण 1: ज्ञान स्रोतों की पहचान

स्थानीय समुदायों, सांस्कृतिक समूहों और ज्ञान धारकों की पहचान की जाए।

चरण 2: सामग्री संग्रह

साक्षात्कार, ऑडियो, वीडियो और दस्तावेजों के माध्यम से सामग्री एकत्र की जाए।

चरण 3: दस्तावेजीकरण

संग्रहित सामग्री को व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकृत किया जाए।

चरण 4: डिजिटलीकरण

मुद्रित एवं भौतिक सामग्री को डिजिटल रूप में परिवर्तित किया जाए।

चरण 5: मेटाडेटा निर्माण

प्रत्येक डिजिटल संसाधन के लिए आवश्यक विवरण तैयार किया जाए।

चरण 6: डिजिटल संग्रह

सामग्री को सुरक्षित सर्वर या डिजिटल रिपॉजिटरी में रखा जाए।

चरण 7: नियंत्रित अभिगम

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

संवेदनशील अथवा समुदाय–विशिष्ट सामग्री के लिए उचित अभिगम नीति बनाई जाए।

12. प्रमुख चुनौतियाँ

12.1 तकनीकी समस्या

ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में तकनीकी सुविधाओं की कमी हो सकती है।

12.2 वित्तीय संसाधन

डिजिटलीकरण एवं दीर्घकालीन संरक्षण के लिए पर्याप्त बजट आवश्यक है।

12.3 प्रशिक्षित विशेषज्ञ

डिजिटल अभिलेखागार के लिए प्रशिक्षित पुस्तकालय एवं सूचना विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।

12.4 बौद्धिक संपदा अधिकार

सामुदायिक ज्ञान के उपयोग और सार्वजनिक प्रसार में अधिकारों तथा अनुमति का विशेष ध्यान आवश्यक है।

12.5 भाषा संबंधी समस्या

स्थानीय एवं जनजातीय भाषाओं में सामग्री के संरक्षण के लिए विशेष तकनीकी व्यवस्था की आवश्यकता हो सकती है।

12.6 सांस्कृतिक संवेदनशीलता

प्रत्येक ज्ञान को सार्वजनिक करना उचित नहीं हो सकता। समुदाय की सहमति और सांस्कृतिक अधिकारों का सम्मान आवश्यक है।

13. प्रस्तावित डिजिटल संरक्षण मॉडल

छत्तीसगढ़ के लिए निम्नलिखित मॉडल विकसित किया जा सकता है–

स्थानीय समुदाय

↓

ज्ञान की पहचान

↓

दस्तावेजीकरण

↓

डिजिटलीकरण

↓

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

मेटाडेटा निर्माण

↓

डिजिटल रिपॉजिटरी

↓

नियंत्रित अभिगम एवं शोध उपयोग

इस मॉडल में पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, स्थानीय समुदाय, सांस्कृतिक संस्थान तथा सूचना विशेषज्ञों के बीच सहयोग आवश्यक होगा।

14. पुस्तकालय विज्ञान के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगिता

यह विषय पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में नए शोध अवसर प्रदान करता है। इस क्षेत्र में निम्न विषयों पर शोध किया जा सकता हैकृ

- जनजातीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण।
- लोक साहित्य का डिजिटल संरक्षण।
- मौखिक इतिहास का संगठन।
- स्थानीय ज्ञान के लिए मेटाडेटा।
- डिजिटल अभिलेखागार प्रबंधन।
- जनजातीय ज्ञान एवं बौद्धिक संपदा अधिकार।
- सामुदायिक सूचना केंद्र।
- स्थानीय भाषा में डिजिटल सूचना सेवाएँ।

इस प्रकार यह विषय पुस्तकालय विज्ञान को स्थानीय समाज और सांस्कृतिक अध्ययन से जोड़ता है।

15. सुझाव

1. छत्तीसगढ़ में राज्य स्तरीय जनजातीय डिजिटल ज्ञान केंद्र स्थापित किया जाए।
2. विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में स्थानीय ज्ञान का विशेष संग्रह विकसित किया जाए।
3. लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री का डिजिटलीकरण किया जाए।
4. स्थानीय समुदायों की पूर्व सहमति से ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया जाए।
5. डिजिटल संरक्षण के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन विकसित किए जाएँ।
6. स्थानीय भाषाओं के लिए विशेष डिजिटल उपकरण विकसित किए जाएँ।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 109-132

7. विश्वविद्यालयों और सांस्कृतिक संस्थानों के बीच सहयोग बढ़ाया जाए।
8. जनजातीय ज्ञान के बौद्धिक अधिकारों की रक्षा की जाए।
9. शोधार्थियों को स्थानीय ज्ञान आधारित अनुसंधान के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
10. डिजिटल अभिलेखागारों को दीर्घकालीन संरक्षण नीति के अंतर्गत विकसित किया जाए।

16. निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ की जनजातीय एवं लोक ज्ञान–संपदा राज्य की सांस्कृतिक विरासत का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। यह ज्ञान केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के शोध, शिक्षा तथा सांस्कृतिक पहचान के लिए भी उपयोगी है।

पारंपरिक ज्ञान का एक बड़ा भाग मौखिक परंपराओं में निहित है। इसलिए इसके लुप्त होने की संभावना को देखते हुए व्यवस्थित दस्तावेजीकरण और डिजिटल संरक्षण आवश्यक है।

पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे स्थानीय ज्ञान को एकत्रित, व्यवस्थित, संरक्षित और प्रसारित करने के लिए आधुनिक डिजिटल तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में विशेष जनजातीय एवं लोक ज्ञान संग्रह स्थापित किए जा सकते हैं।

छत्तीसगढ़ में जनजातीय डिजिटल अभिलेखागार की स्थापना एक महत्वपूर्ण पहल हो सकती है। इससे राज्य की लोक और जनजातीय ज्ञान–संपदा सुरक्षित रहेगी तथा शोधार्थियों, विद्यार्थियों और भावी पीढ़ियों को इसका लाभ प्राप्त होगा।

अतः छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक ज्ञान–संपदा के संरक्षण के लिए पुस्तकालय विज्ञान, डिजिटल तकनीक और स्थानीय समुदायों के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

संदर्भ सूची

- Chhattisgarh Tribal Research and Training Institute. (n.d.). *Tribal culture and heritage of Chhattisgarh*. Government of Chhattisgarh.
- International Federation of Library Associations and Institutions. (2012). *IFLA principles for the care and handling of library material*.
- International Federation of Library Associations and Institutions. (2015). *UNESCO/IFLA preservation guidelines*.

- Ministry of Tribal Affairs, Government of India. (n.d.). *Tribal cultural heritage and traditional knowledge resources*.
- Mukherjee, B. (2018). Indigenous knowledge and information management in India: Issues and perspectives. *Library and Information Science Research*.
- National Mission for Manuscripts. (n.d.). *Documentation and preservation of India's manuscript heritage*. Government of India.
- Ranganathan, S. R. (1963). *The five laws of library science*. Asia Publishing House.
- UNESCO. (2003). *Convention for the safeguarding of the intangible cultural heritage*. UNESCO.
- UNESCO. (2015). *Recommendation concerning the preservation of, and access to, documentary heritage including in digital form*. UNESCO.
- World Intellectual Property Organization. (n.d.). *Traditional knowledge*. WIPO.
- Government of Chhattisgarh. (n.d.). *Culture and tribal heritage of Chhattisgarh*. Government of Chhattisgarh.

Innovation and Integrative Research Center Journal